दुनिया आपके उदाहरण से बदलेगी आपकी राय से नहीं।

– अज्ञात

ढांचे में बुनियादी बदलाव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रेलवे में रिफॉर्म के लिए कई अहम फैसले किए। रेलवे की आठ विभिन्न सेवाओं को मिलाकर सरकार ने 'इंडियन रेलवे मैनेजमेंट सर्विस' नामक एक नई सेवा के गठन का फैसला किया है।

आलोक प्रसाद

सरकार रेलवे के प्रबंधन ढांचे में बुनियादी बदलाव करने जा रही है। उसका दावा है कि इससे भारतीय रेल के विभिन्न विभागों के बीच वर्चस्व की लड़ाई व गुटबाजी खत्म होगी और कामकाज में सरलता व पारदर्शिता आएगी। लेकिन विशेषज्ञों की राय है कि इससे चीजें और भी उलझेंगी।

मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रेलवे में रिफॉर्म के लिए कई अहम फैसले किए। रेलवे की आठ विभिन्न सेवाओं को मिलाकर सरकार ने 'इंडियन रेलवे मैनेजमेंट सर्विस' नामक एक नई सेवा के गठन का फैसला किया है। रेलवे बोर्ड में अब चेयरमैन के अलावा सिर्फ चार कार्यकारी मेंबर होंगे और ये पांचों कुल पांच विभागों ऑपरेशन, बिजनेस डिवेलपमेंट, ह्यूमन रिसोर्सेज, इन्फ्रास्ट्रक्चर और फाइनैंस का जिम्मा संभालेंगे। इनके अलावा कुछ स्वतंत्र अनुभवी विशेषज्ञ भी बोर्ड से जुड़ेंगे, जिसके लिए उद्योग, वित्त, अर्थशास्त्र और प्रबंधन का 30 वर्ष का अनुभव जरूरी होगा। बोर्ड के चेयरमैन को अब चेयरमैन–सह–सीईओ के नाम से जाना जाएगा। सरकार का कहना है कि काडरों की आपसी प्रतिद्वंद्विता के कारण फैसले लेने में दिक्कत होती थी। कई महत्वाकांक्षी प्रॉजेक्ट्स इसी कारण लटक गए। जैसे इलेक्ट्रिकल और मकैनिकल काडर के बीच खींचतान की वजह से महत्वाकांक्षी ट्रेन 18 प्रॉजेक्ट पर नकारात्मक असर पड़ा। लेकिन विभागों को मिलाने का बहुत खराब अनुभव इंडियन एयरलाइंस और एयर इंडिया के विलय में देखने को मिला है। अफसरों की खींचतान की वजह से एयर इंडिया बंद होने के कगार पर है। रेलवे में यह नौबत नहीं आएगी, इसकी क्या गारंटी है? रेलवे के

मौजूदा अफसरों के लिए नई सेवा में खुद को ढालना आसान नहीं होगा। इससे उनकी वरीयता प्रभावित हो सकती है, जिसका उनके मनोबल पर बुरा असर पड़ेगा। फिर नई भर्तियों के लिए भी नया ढांचा खड़ा करना पड़ेगा।

आधी ऊर्जा इन कार्यो पर खर्च होने से रेलवे के कामकाज पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। बोर्ड में स्वतंत्र सदस्यों को लेने से पैदा होने वाली जटिलता पर पहले ही ठीक से सोच लेना चाहिए। बाहरी मेंबरों का हस्तक्षेप बोर्ड के सीईओ और कार्यकारी सदस्यों को खटक सकता है। वैसे भी रेलवे के कामकाज में विशेषज्ञों को शामिल करने का अनुभव अच्छा नहीं है। इस दिशा में कायाकल्प परिषद का प्रयोग असफल ही रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार रेलवे के केंद्रीकरण और कॉर्पोरेटीकरण में जुटी है। बोर्ड में स्थायी सदस्य कम रखने और चेयरमैन को सीईओ बनाने के पीछे मंशा यही है कि सरकार इस दिशा में बेझिझक आगे बढ़ सके। सरकार चेयरमैन की भूमिका बढ़ा रही है, पर अभी तक उसका कार्यकाल तय नहीं किया गया है। इसीलिए वह ढंग से कोई काम नहीं कर पाता। रेलवे यूनियन नेताओं का कहना है कि ये सुधार निजीकरण को आसान बनाने के लिए हैं। बहरहाल, एक बात तो है कि सरकार रेलवे में सुधार के लिए चिंतित है। उम्मीद करें कि इतने बड़े फैसले ठीक से सोच–विचार करके ही लिए जा रहे होंगे।

ऊर्जा बुद्धिमत्ता है

धर्म-दर्शन

आसू। ध्यान के अभ्यास का उद्देश्य स्वस्थ होना और परिवर्तन लाना है। यह हमारी पूर्ण होने में और हमें हमारे आसपास की वास्तविकता जानने के लिए अपने अंदर और आसपास देखने में मदद करता है। ध्यान में प्रयोग की जाने वाली ऊर्जा बुद्धिमत्ता है। वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को देखने और उन के दिल में गहराई से उतरने के लिए। जब बुद्धि मौजूद होती है, ध्यान मौजूद होता है। बुद्धि ध्यान लगाने की वस्तु के असली सार को समझने में हमारी मदद करती है। चाहे ये एक धारणा हो, एक भावना हो, एक कार्रवाई हो, एक प्रतिक्रिया हो, एक व्यक्ति या वस्तु की उपस्थिति हो।

गहराई से देख कर, ध्यान का अभ्यास करने वाले अंतर्दृष्टि, प्रज्ञा, या ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। इस जानकारी में, हमारे दुख और बंधन से हमें मुक्त करने की शक्ति है।

संपादकीय

जनता ही जनार्दन

लोकतंत्र में जनता और उसके जनादेश का नजरिया कभी स्थाई नहीं होता। सरकारें अगर जनता के विश्वास पर खरी नहीं उतरतीं तो उन्हें अपनी सत्ता गंवानी पड़ती है। ऐसी स्थिति में सरकारों को आम लोगों के नजरिये को गहराई से समझना चाहिए। लोकतंत्र में जनता ही जनार्दन है। लेकिन सत्ता की अकड़ डुबोती है। झारखंड का जनादेश कम से कम यहीं संदेश देता है। सरकारों को इस भूल से निकलना चाहिए। केंद्र और राज्य की कमान एक डोर से नहीं खींची जा सकती। बदलते राजनीतिक समीकरण में बीजेपी और कांग्रेस जैसे केंद्रीय दलों के लिए यह बड़ी चुनौती है। राज्यों में वह बगैर कंधे के नहीं सफल हो सकती हैं। झारखंड में बीजेपी की पराजय की वजह भी यही है। राज्य की जनता ने केंद्रीय मुद्दों को किनारे रख आदिवासी समस्याओं को तरजीह दी। बीजेपी जहां नागरिकता बिल और धारा–370 में अटकी रही वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा का युवा चेहरा हेमंत सोरेन ने आदिवासी पीड़ा हो अच्छी तरह समझा और उसी मसलों पर चोट किया जिसकी वजह से बीजेपी बैकफुट पर चली गई। आजसू जैसे विश्वसनीय सियासी दोस्त को भी बीजेपी ने किनारे रखा। झारखंड से निकला जनादेश का संदेश बीजेपी और उसके शीर्ष नेतृत्व के लिए बड़ी सीख है। बीजेपी की राजनीतिक साख और जनविश्वास का सूचकांक गिर रहा है। एक साल में बीजेपी ने पांच राज्यों को गंवा दिया। मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट, छत्तीसगढ़ के बाद झारखंड में भी बीजेपी का सफाया हो गया। 2019 में बीजेपी केंद्र में बड़े बहुमत से भले सत्ता में आई, लेकिन राज्यों में खिसकता जनाधार उसकी पकड़ कमजोर बना रहा है। हालांकि इस दौरान उसने कर्नाटक, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम में सरकार बनाई है। सात माह में 18 फीसदी वोट घटे हैं यह बीजेपी और केंद्रीय नेतृत्व की नींद उड़ाने वाला है।

लगातार दो लोकसभा चुनावों में बहुत कमजोर प्रदर्शन के बावजूद कांग्रेस ने अपना हौसला नहीं खोया। अभी देखने में आ रहा है कि उसने अपनी रणनीति में एक बड़ा बदलाव भी किया है।

कांग्रेस ने हौसला नहीं खोया

राधा शर्मा

झारखंड के चुनावी नतीजों ने बीजेपी के कांग्रेस मुक्त भारत के सपने को गहरा झटका दिया है। झारखंड में हार के साथ ही बीजेपी ने अपने शासन वाले जो पांच राज्य गंवाए हैं, उन सभी में कांग्रेस या तो सीधे या फिर एक भागीदार के रूप में सत्ता में आ गई है। वर्ष 2014 के बाद से ही बीजेपी लोगों को यह समझाने में जुटी हुई है कि एक सियासी ताकत के रूप में कांग्रेस तेजी से सिकुड़ रही है और जल्द ही यह अतीत का हिस्सा बन जाएगी। आश्चर्य की बात यह कि जब पिछले दिनों सीएए–एनआरसी को लेकर देशभर में विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हुआ तो बीजेपी नेताओं ने एक सुर में कहा कि यह कांग्रेस ही है जो लोगों को भड़का रही है। यानी अनजाने में उन्होंने मान लिया कि कांग्रेस की उपस्थिति देश भर में है और उसका असर जनता के एक बड़े तबके पर है।

यह बात उतनी न सही पर काफी हद तक सच है। लगातार दो लोकसभा चुनावों में बहुत कमजोर प्रदर्शन के बावजूद कांग्रेस ने अपना हौसला नहीं खोया। अभी देखने में आ रहा है कि उसने अपनी रणनीति में एक बड़ा बदलाव भी किया है। खुद को स्वाभाविक शासक समझने की

मानसिकता से वह बाहर निकली और कई राज्यों में उसने किसी क्षेत्रीय पार्टी का जूनियर पार्टनर बनना स्वीकार किया। खुद को पीछे रखकर विपक्ष के विभिन्न दलों में एकता बनाने की यह पहलकदमी रंग ला रही है। झारखंड का उदाहरण सामने है। इससे पहले महाराष्ट्र में उसने शिवसेना के साथ जाने का फैसला किया, जो हाल तक कल्पना से परे था। अच्छी बात यह कि बिल्कुल विपरीत विचार वाले दल के साथ हाथ मिलाते हुए भी पार्टी अपनी मूल प्रस्थापनाओं पर डटी है। महाराष्ट्र में शिवसेना के नेतृत्व वाली सरकार में शामिल होने से पहले उसने कॉमन मिनिमम प्रोग्राम पर जोर दिया। पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने सावरकर पर अपने विचार खुलकर व्यक्त किए और शिवसेना के विरोध के बावजूद नरमी का कोई संकेत नहीं दिया। दरअसल कांग्रेस के सामने अभी दोहरी चुनौती है। बीजेपी के आक्रामक हिंदुत्व से आशंकित लोग कांग्रेस से वैचारिक हस्तक्षेप की उम्मीद लगाए हुए हैं। भारत में धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई का नेतृत्व करने की अपेक्षा उसके सिवाय और किसी से की भी नहीं जा सकती। लेकिन कांग्रेस का ढांचा किसी वैचारिक लड़ाई के लिए उपयुक्त नहीं रह गया है। उसकी दूसरी लाइन के नेताओं के लिए सत्ता में बने रहना और अपनी खोई जमीन हासिल करना ज्यादा बड़ी प्राथमिकता है।

सच कहें तो कांग्रेस के लिए दोनों दायित्व बराबर के हैं। राहुल गांधी ने कांग्रेस की वैचारिक जमीन मजबूत करने की कोशिश की जिससे पार्टी में असंतोष फैला और उसकी सियासी भूमिका प्रभावित हुई। उनके उलट कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी का जोर पार्टी ढांचे को साधे रखने पर है। कांग्रेस का भविष्य इन दोनों पहलुओं के संतुलन से ही तय होना है।

सूडोकु नवताल-5196

मध्यम

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5195 का हल

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

जाति–धर्म के नाम पर माहौल खराब करते चंद लोग

दीपक कुमार त्यागी। महात्मा गांधी जी का सत्य एवं अहिंसा का संदेश किसी भी देश में शांति, विकास एवं प्रगति के लिए आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। सम्पूर्ण विश्व को महात्मा गांधी जी के सत्य–अहिंसा के संदेश को देने वाला हमारा प्यारा भारत, आज कुछ जाति–धर्म के ठेकेदारों, चंद इंसानियत के दुश्मन लोगों व राजनेताओं के क्षणिक स्वार्थ के चलते बहुत तेजी के साथ झूठ, छल–कपट व हिंसा से दिनप्रतिदिन ग्रस्त होता जा रहा है। देश में अपनी ओछी राजनीति चमकाने के फैशन के चलते जाति–धर्म, हिन्दू–मुसलमान व अमीर–गरीब के नाम पर लगातार घृणा फैलाई जा रही है, सत्ता हासिल करने के लालच में चंद राजनेताओं के द्वारा आम देशवासियों के बीच में नफरत की कभी ना टूटने वाली मजबूत दीवार खड़ी करने का लगातार शर्मनाक प्रयास जारी है। आज कुछ लोगों व नेताओं की कृपा से देश में चारों तरफ धार्मिक व जातिगत उन्माद चरम पर है।